हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में होने वाला

सुन्नतों भरा बयान

13-OCT-2016

ह़सनैने करीमैन से हुज़ूर (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) की मह़ब्बत

(Hindi)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

نَوَیْتُ سُنَّتَ الاِعْتِکَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाखि़ल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा ।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है **:** "जो मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाएगा और जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक भेजेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सौ रह़मतें नाज़िल फ़रमाएगा और जो मुझ पर सौ मरतबा दुरूदे पाक भेजेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देगा कि येह बन्दा निफ़ाक़ और दोज़ख़ की आग से बरी है और क़ियामत के दिन उसे शुहदा के साथ रखेगा ।"

(مجمع الزوائد، کتاب الادعیۃ، فی الصلوۃ علی النبی۔۔۔ الخ، الحدیث: ۱۷۲۹۸، ج۱۰، ص۲۵۳)

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विर्दे ज़बां रहे
मेरी फ़ुज़ूल गोई की आ़दत निकाल दो

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 305)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं **:**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** "نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है । (اَلْمُعْجَمُ الکبیر للطّبرانی ج۶ ص۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

www.dawateislami.net

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा। ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ात़िर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा। ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा। ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा। ۞ صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب، اُذْکُرُوااللّٰہَ، تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہِ ۞ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा। ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जन्नतियों के सरदार

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "एक बार मैं ने अपनी वालिदए माजिदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से अ़र्ज़ की : आप मुझे इजाज़त अ़त़ा फ़रमाएं कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इक़्तिदा में नमाज़े मग़रिब अदा करूं और अ़र्ज़ करूं कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे और तुम्हारे लिये दुआ़ए मग़फ़िरत फ़रमाएं। ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं नबिय्ये करीम, मह़बूबे रब्बे अ़ज़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हुवा और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इक़्तिदा में नमाज़े मग़रिब पढ़ी, जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इ़शा की अदाएगी से भी फ़ारिग़ हो गए और तशरीफ़ ले जाने लगे तो मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे पीछे चल पड़ा। नबिय्ये ग़ैब दां, रसूले ज़ीशां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी आवाज़ सुनी तो फ़रमाया : कौन ? क्या हुज़ैफ़ा ? अ़र्ज़ की : जी हां ! इरशाद फ़रमाया : तुम्हारी क्या ह़ाजत है ? غَفَرَ اللّٰہُ لَکَ وَ لِاُمِّکَ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

तुम्हारी और तुम्हारी मां की मग़्फ़िरत फ़रमाए । फिर फ़रमाया : येह एक फ़िरिश्ता है जो इस रात से पहले कभी ज़मीन पर नहीं उतरा, इस ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से इजाज़त मांगी कि मुझे सलाम करे और मुझे बिशारत दे कि بِاَنَّ فَاطِمَةَ سَيِّدَةُ نِسَاءِ اَهْلِ الْجَنَّةِ फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا) जन्नती औरतों की सरदार हैं, وَ اَنَّ الْحَسَنَ وَالْحُسَيْنَ سَيِّدَا شَبَابِ اَهْلِ الْجَنَّةِ और हसन व हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) जन्नती नौ जवानों के सरदार हैं ।"

(سنن الترمذی، ابواب المناقب عن رسول اللہ، باب مناقب حسن بن علی بن ابی طالب، حدیث: ۳۷۸۸)

ग़ैब दान आक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नूरे नुबुव्वत से हज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पहचान भी लिया और इन की दिली हाजत भी मा'लूम कर ली कि येह क्यूं आ रहे हैं ? और बिग़ैर इन के कहे इन के लिये और इन की वालिदा के लिये दुआए मग़्फ़िरत भी फ़रमा दी । यक़ीनन हमारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दिल की हालत पोशीदा नहीं है, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर तो पथ्थरों की हालत भी अयां है । चुनान्चे, अहादीसे तय्यिबा की सब से मो'तबर किताब "बुख़ारी शरीफ़" में है :

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اُحُدٌ جَبَلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهٗ उहुद पहाड़ हम से महब्बत करता है और हम इस से महब्बत करते हैं । (بخاری، کتاب الزکاۃ، باب خرص التمر، ج۱، ص۵۰۰، حدیث: ۱۴۸۲)

इल्मे ग़ैबे मुस्तफ़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर कीजिये ! जब आक़ा عَلَيْهِ السَّلَام को एक पथ्थर का हाल मा'लूम है और वोह जानते हैं कि किस पथ्थर में हम से कितनी महब्बत है तो वोह बन्दए मोमिन के दिली हालात से भी यक़ीनन वाक़िफ़ हैं, जभी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कहे बिग़ैर ही उन की दिली ख़्वाहिश पर मुत्तलअ़ हो गए और उन के लिये और

www.dawateislami.net

उन की वालिदा के लिये दुआए मग़फ़िरत फ़रमाई । इस रिवायत को सुन कर अगर येह वस्वसा आए कि दिलों के हालात और कैफ़िय्यात का इल्म तो ग़ैब है और इल्मे ग़ैब सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास है, तो याद रख लीजिये कि इस में कोई शक नहीं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَة है, उस का इल्मे ग़ैब ज़ाती या'नी उस का अपना है और हमेशा हमेशा से है जब कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाए इ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इल्मे ग़ैब ज़ाती नहीं बल्कि अ़ताई या'नी **अल्लाह** तआ़ला का दिया हुवा है और उन्हें येह इल्म हमेशा हमेशा से नहीं है बल्कि जब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें दिया है, तब से है और जितना दिया उतना ही है, उस के दिये बिग़ैर एक ज़र्रा का भी इल्म उन्हें हासिल नहीं, लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही अम्बिया और औलिया को इल्म अ़ता फ़रमाता है और वोह उस इल्म को आगे भी फैलाते हैं ।

चुनान्चे, इल्मे ग़ैबे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में कुरआने पाक में इरशाद होता है :

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ﴿۲۴﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** *और येह नबी ग़ैब बताने में बख़ील नहीं*

(پ۳۰، سورۃ التکویر: ۲۴)

इस आयते करीमा के तह़्त तफ़्सीरे ख़ाज़िन में है : (इस आयत से) मुराद येह है कि सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास इल्मे ग़ैब आता है तो लोगों पर उसे बयान करने में बुख़्ल नहीं फ़रमाते बल्कि तुम को बताते हैं ।

(ख़ाज़िन, 4 / 3)

इस आयत व तफ़्सीर से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों को ग़ैब बताते हैं और ज़ाहिर है, बताएगा वोही जो खुद भी जानता हो ।

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه "ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़" में क्या ख़ूब फ़रमाते हैं :

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद

शर्हे कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप की शान के क्या कहने ! शबे मे'राज ऐन जागती ह़ालत में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने मुबारक सर की आंखों से अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का दीदार किया, तो यूं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो कि ग़ैबुल ग़ैब है, वोह भी अपने फ़ज़्लो करम से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ज़ाहिर व आश्कार हो गया तो अब कोई और ग़ैब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से किस त़रह़ निहां या'नी छुपा रह सकता है, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर करोड़ों बार दुरूदो सलाम का नुज़ूल हो ।

बच्चा बच्चा नूर का

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी ईमान अफ़रोज़ ह़दीसे पाक से आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शहज़ादी की शाने अ़ज़मत निशान के साथ साथ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नवासे ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا की शानो शौकत भी ज़ाहिर हुई । दोनों शहज़ादे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुशाबेह थे ।

(بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب الحسن والحسین رضی اللہ عنھما، ۲/۵۴۷، حدیث: ۳۷۵۲ و ۳۷۴۸ ملتقطا)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने नमाज़े अ़स्र पढ़ी फिर बाहर निकले, उन के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم भी थे । एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को बच्चों के साथ खेलते हुवे देखा तो फ़र्ते़ महब्बत से उन्हें अपने कन्धे पर उठा लिया और फ़रमाया : मेरा बाप इन पर कुरबान ! येह नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुशाबहत रखते हैं, अ़ली से मुशाबहत नहीं रखते जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه मुस्कुरा रहे थे । (بخاری، کتاب المناقب، باب صفۃ النبی، ۲/۴۸۶، حدیث: ۳۵۴۲)

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 246)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا करम व शफ़्क़त के बाग़ के महकते फूल हैं, येह दोनों सरकारे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नवासे हैं, आक़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इन से कमाल मह़ब्बत थी । आइये ! इन की मह़ब्बत को परवान चढ़ाने और अपने पल्ले में नेकियां लिखवाने की निय्यत से इन का ज़िक्रे ख़ैर सुनते हैं :

नामो कुन्यत व अल्क़ाब

इन दोनों शहज़ादों में से बड़े ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत "**अबू मुह़म्मद**" है । लक़ब "तक़ी व सय्यिद" जब कि उ़र्फ़ "سِبْطُ رَسُوْلِ اللّٰہ" और "सिब्ते़ अक्बर" है । आप को "رَیْحَانَۃُ الرَّسُوْل" (या'नी रसूले ख़ुदा के फूल) और "آخِرُ الْخُلَفَاءِ بِالنَّصِّ" (या'नी ह़दीसे पाक के मुत़ाबिक़ आख़िरी ख़लीफ़ा) भी कहते हैं । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादते मुबारका 15 रमज़ानुल मुबारक 3 हिजरी की शब में मदीनए त़य्यिबा में हुई । हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सातवें रोज़ आप का अ़क़ीक़ा किया और बाल जुदा किये गए और हुक्म दिया कि बालों के वज़्न की चांदी सदक़ा की जाए ।

(تاریخُ الْخُلَفَا، بابُ الحسن بن علی بن ابی طالب، ص۱۴۹ و روضۃ الشھداء (مترجم)، باب ششم، ۱۳۹/۲)

आप का नाम इमामुल अम्बिया, सय्यिदुल अस्ख़िया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ही "**ह़सन**" रखा । (सवानहे़ करबला, स. 92)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के छोटे भाई इमामे आ़ली मक़ाम, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत 5 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म सिने 4 हि. को मदीनए मुनव्वरा में हुई । इन का नाम भी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने "**हुसैन**" और "**शब्बीर**" रखा जब कि आप की कुन्यत "**अबू अ़ब्दुल्लाह**" और आप का लक़ब भी "سِبْطُ رَسُوْلِ اللّٰہِ" (या'नी रसूले ख़ुदा के नवासे) और "رَیْحَانَۃُ الرَّسُوْل" (या'नी रसूले ख़ुदा के फूल) है और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी जन्नती जवानों के सरदार हैं ।

(اسد الغابۃ، باب الحاء والحسین، ۱۱۷۳۔الحسین بن علی، ص۲۶، ۲۵ملتقطاً وسیر اعلام النبلاء، ۲۷۰۔الحسین... الخ، ۴۰۲/۴۔۴۰۴)

www.dawateislami.net

उम्मुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡهَا फ़रमाती हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन और इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا की पैदाइश के सातवें दिन, उन की त़रफ़ से दो दो बकरियां अ़क़ीक़ा में ज़ब्ह़ फ़रमाईं ।

(مصنف عبد الرزاق، باب العقیقہ، ۴/۲۵۴،حدیث: ۷۹۹۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अ़क़ीक़ा करना एक सुन्नत अ़मल है । (फ़तावा रज़विय्या, जि. 20, स. 586) सदरुश्शरीअ़ा, बदरुत्त़रीक़ा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحۡمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं : अ़क़ीक़े के लिये सातवां दिन बेहतर है और अगर सातवें दिन न कर सकें तो जब चाहें कर सकते हैं, सुन्नत अदा हो जाएगी । बा'ज़ ने येह कहा कि सातवें या चौदहवें या इक्कीस्वें दिन या'नी सात दिन का लिह़ाज़ रखा जाए येह बेहतर है और याद न रहे तो येह करे कि जिस दिन बच्चा पैदा हो, उस दिन को याद रखें, उस से एक दिन पहले वाला दिन जब आए तो वोह सातवां होगा, मसलन जुमुअ़ा को पैदा हुवा तो जुमा'रात सातवां दिन है और सनीचर (या'नी हफ़्ते) को पैदा हुवा तो सातवां दिन जुमुअ़ा होगा । पहली सूरत में जिस जुमा'रात को और दूसरी सूरत में जिस जुमुअ़ा को अ़क़ीक़ा करेगा उस में सातवें दिन का ह़िसाब ज़रूर आएगा । (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 356)

अ़क़ीक़े के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करना चाहें तो अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُهُمُ الۡعَالِیَه के रिसाले "**अ़क़ीक़े के बारे में सुवाल जवाब**" का मुत़ालअ़ा फ़रमाइये ।

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आक़ा عَلَیۡهِ السَّلَام की नवासों से मह़ब्बत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यहां येह बात क़ाबिले ग़ौर है कि उ़मूमन जब भी बच्चा पैदा होता है अ़क़ीक़ा उस के वालिदैन ही करते हैं लेकिन हम देखते हैं कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡه की विलादत हुई तब भी और जब ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡه तशरीफ़ लाए तब

भी अ़क़ीक़ा उन के वालिदैन ने नहीं किया बल्कि उन के नाना जान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ही अपने प्यारे नवासों का अ़क़ीक़ा फ़रमाया। इस से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि हुज़ूर عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने नवासों से कैसी महब्बत फ़रमाते थे ? आक़ा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام न सिर्फ़ ह़सनैने करीमैन से प्यार और महब्बत फ़रमाते थे बल्कि आप عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने कई मवाक़ेअ़ पर उन की शानो अ़ज़्मत को भी बयान फ़रमाया है। आइये ! "**ह़सनैन**" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से उन की अ़ज़्मतो शान के मुतअ़ल्लिक़ पांच अह़ादीसे मुबारका सुनते हैं :

1. अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को सरकार (عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) के कन्धों पर सुवार देखा तो कहा : आप दोनों की सुवारी कैसी शानदार है ! तो नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : और सुवार भी तो कैसे ला जवाब हैं। (ترمذی، باب مناقبِ حسن رضی اللہ عنہ ج۵، ص۴۳۲، حدیث ۳۸۰۹)
2. एक और ह़दीसे पाक में इरशाद फ़रमाया :
مَنْ اَحَبَّهُمَا فَقَدْ اَحَبَّنِیْ وَمَنْ اَبْغَضَهُمَا فَقَدْ اَبْغَضَنِیْ जिस ने इन दोनों से महब्बत की, उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने इन से अ़दावत (या'नी दुश्मनी) की उस ने मुझ से अ़दावत (या'नी दुश्मनी) की।
(ابن ماجه، كتاب السنة، باب فى فضائل اصحاب رسول الله، ١/٩٦، حديث: ١٤٣)
3. ह़सन और हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا जन्नती जवानों के सरदार हैं।
(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی محمد الحسن بن علی... الخ، الحدیث: ۳۷۹۳، ج۵، ص۴۲۶)
4. हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन दोनों नौ निहालों को सूंघते और सीनए मुबारक से लिपटाते।
(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی محمد الحسن بن علی... الخ، الحدیث: ۳۷۹۷، ج۵، ص۴۲۸)
5. هُمَا رَيْحَانَتَایَ مِنَ الدُّنْيَا ह़सन व हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) दुन्या में मेरे दो फूल हैं। (ترمذی، باب مناقبِ حسن رضی اللہ عنہ ج۵، ص۴۲۷، حدیث ۳۷۹۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर कीजिये कि प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से कैसी कमाल महब्बत व उल्फ़त थी, वोह लोग जो अपने बच्चों से इस वज्ह से प्यार व महब्बत से पेश नहीं आते कि कहीं उन का रो'ब व दबदबा ख़त्म न हो जाए, उन के लिये आक़ा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का येह अ़मल दर्से नसीहत है कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सय्यिदे काइनात होने के बा वुजूद भी अपने नवासों को कन्धों पर सुवार फ़रमाते थे । आक़ा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ह़सनैने करीमैन की महब्बत को अपनी महब्बत क़रार दिया और ह़सनैने करीमैन से दुश्मनी को खु़द से दुश्मनी क़रार दिया, अपनी औलाद को चूमना, खु़द से चिमटाना, कन्धों पर सुवार करना और उन्हें सीने से लगाना येह तो होता ही है लेकिन आक़ा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को सूंघा भी करते और फ़रमाते ह़सन व हुसैन (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) दुन्या में जन्नत के फूल हैं ।

(مرأۃ المناجیح، باب مناقب اہل بیت النبی، الفصل الاول، ۸/۴۶۲)

उन दो का सदक़ा जिन को कहा मेरे फूल हैं
*कीजिये **रज़ा** को ह़श्र में ख़न्दां मिसाले गुल*

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 77)

शर्हे कलामे रज़ा : ऐ मेरे प्यारे आक़ा ! अपने जिन दो शहज़ादों को आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना फूल फ़रमाया या'नी ह़ज़रते इमामे ह़सन और ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم इन के सदके़ में रज़ा को मैदाने मह़शर में हर क़िस्म की मुश्किलात व परेशानियों से बचा कर मुस्कुराते (या'नी खिलते) हुवे फूल की त़रह़ कर दीजिये । (शर्हे ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 217, माख़ूज़न)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अहले बैत की महब्बत ईमान का जुज़ है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! एक मुसलमान के लिये लाज़िम है कि वोह अपनी जान, माल, औलाद से बढ़ कर सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से महब्बत रखे क्यूंकि हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की महब्बत ही

अस्ले ईमान है, इस के बिग़ैर दा'वए ईमान हरगिज़ क़ाबिले क़बूल नहीं, आक़ा करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत की अ़लामत येह भी है कि बन्दा उन तमाम लोगों से भी मह़ब्बत करे और उन का अदबो एह़तिराम करे जिन को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत व तअ़ल्लुक़ ह़ासिल है।

याद रखिये ! सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से मह़ब्बत करना मह़ब्बते रसूल की अ़लामत है। अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ से मह़ब्बत करना मह़ब्बते रसूल की अ़लामत है। अहले बैते अत़हार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मह़ब्बत करना मह़ब्बते रसूल की अ़लामत है। ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मह़ब्बत करना मह़ब्बते रसूल की अ़लामत है।

हम को सारे सय्यिदों से प्यार है

اِنْ شَآءَ الله दो जहां में अपना बेड़ा पार है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ुद ह़दीसे पाक में अपनी औलाद को अहले बैते किराम की मह़ब्बत सिखाने की तरग़ीब मौजूद है। चुनान्चे,

आक़ा عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : اَدِّبُوْا اَوْلَادَكُمْ عَلٰى ثَلَاثِ خِصَالٍ अपने बच्चों को तीन चीज़ें सिखाओ حُبِّ نَبِيِّكُمْ अपने नबी की मह़ब्बत, وَحُبِّ اَهْلِ بَيْتِهٖ और अहले बैत की मह़ब्बत, وَقِرَاءَةِ الْقُرْاٰنِ और क़ुरआने पाक पढ़ना।

(الصواعقُ المُحرقه، المقصدُ الثانی فیما تضمنته تلك الآیة من طلب محبة آله، ص ۱۷۲)

इस ह़दीसे पाक से मा'लूम हुवा कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने अहले बैते किराम से किस क़दर मह़ब्बत फ़रमाते कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को इस बात की ता'लीम इरशाद फ़रमा रहे हैं कि तुम तो मुझ से और मेरे अहले बैत से मह़ब्बत करते ही हो अपनी आने वाली नस्लों के दिलों में भी मेरी और मेरे अहले बैत की मह़ब्बत पैदा करो ताकि उन का शुमार भी नजात याफ़्ता लोगों में हो। एक और मक़ाम पर तो आक़ा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने अहले बैते किराम की मह़ब्बत को ईमाने कामिल के लिये शर्त़ क़रार दिया। चुनान्चे,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : कोई बन्दा मोमिने कामिल नहीं होता यहां तक कि मैं उसे उस की जान से ज़ियादा प्यारा न हों और मेरी औलाद उस को अपनी जान से ज़ियादा प्यारी न हो और मेरे अहल उन को अपने अहल से ज़ियादा महबूब न हों और मेरी ज़ात उस को अपनी ज़ात से ज़ियादा प्यारी न हो । (شعب الایمان للبیہقی، باب فی حب النبی، فصل فی براءته فی النبوة، الحدیث: ۱۵۰۵، ۲/ ۱۸۹)

ईमां जिसे कहते हैं अ़क़ीदे में हमारे
वोह तेरी महब्बत तेरी इ़तरत की विला है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि मोमिने कामिल बनने और उख़्-रवी नजात पाने के लिये अहले बैते किराम की महब्बत बहुत ज़रूरी है । **अहले बैत की महब्बत** रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत है, **अहले बैत की महब्बत अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा पाने का सबब है, **अहले बैत की महब्बत** ईमाने कामिल की निशानी है, **अहले बैत की महब्बत** दोनों जहां की काम्याबी पाने का सबब है, **अहले बैत की महब्बत** ख़ातिमा बिल ख़ैर का ज़रीआ़ है, **अहले बैत की महब्बत** सच्चे आ़शिक़े रसूल होने की अ़लामत है, **अहले बैत की महब्बत** गुलामिये मुस्तफ़ा की सनद है । अल गरज़ ! **अहले बैत** से महब्बत रखना बहुत बड़ी सआ़दत और दाइमी नजात का सबब है, इस लिये हमें ख़ुद भी उन से महब्बत करनी चाहिये और अपनी औलाद को भी अहले बैते अत़हार की महब्बत और उन का अदब सिखाना चाहिये । इस का एक ज़रीआ़ येह भी है कि अपनी औलाद को अहले बैते अत़हार के वाक़िआ़त सुनाए जाएं, अहले बैते किराम की सीरत व किरदार से उन्हें आगाह किया जाए और उन की ता'लीमात पर अ़मल करने का दर्स दिया जाए ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना ने अहले बैते अत़हार के मुतअ़ल्लिक़ कुतुबो रसाइल शाएअ़ किये हैं, जिन में से एक निहायत ही प्यारी किताब "**शाने ख़ातूने जन्नत**" भी है, जिस में शहज़ादिये कौनैन, मख़्दूमए काइनात, ख़ातूने जन्नत, हज़रते बीबी फ़ातिमा

www.dawateislami.net

ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की सीरत व किरदार के रंग बिरंगे मदनी फूलों से महकती ख़ुश्बूएं उम्मते मुस्लिमा तक पहुंचाने की कोशिश की गई है । इस के इलावा रिसाला **''हुसैनी दुल्हा''** और **''करामाते इमामे हुसैन** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ'' येह रसाइल भी मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन त़लब किये जा सकते हैं नीज़ दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislami.net से इन्हें पढ़ा (Read) भी किया जा सकता है, डाउन लोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है ।

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिगर पारे, ह़ज़रते बीबी फ़ाति़मा ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के शहज़ादे और अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم के दुलारे (बहुत ही प्यारे और लाडले) हैं, इन के फ़ज़ाइलो मनाक़िब बे शुमार हैं, क्यूं न हो कि इन्ही का घराना ही तो है जो तमाम फ़ज़ाइलो कमालात और बरकातो ह़सनात का ममबअ़ व मर्कज़ है । येह दोनों शहज़ादे रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कमालात के मज़हर और जामेअ़ थे । रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने अहले बैत में से ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से बे पनाह महब्बत फ़रमाते थे ।

महब्बत का निराला अन्दाज़

ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ फ़रमाते हैं कि मैं एक रात किसी काम से नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में गया, तो नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस त़रह़ तशरीफ़ लाए कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी चीज़ को गोद में लिये थे, मुझे ख़बर न थी कि वोह क्या है जब मैं अपनी ज़रूरत से फ़ारिग़ हुवा, मैं ने पूछा : येह क्या है जो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم गोद में लिये हैं ? हुज़ूर عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उसे खोला तो ह़सन व हुसैन (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) आप (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की आग़ोश में थे फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : येह दोनों मेरे बेटे, मेरी बेटी के बेटे हैं । इलाही ! मैं इन दोनों से महब्बत करता हूं, तू भी इन से महब्बत कर और जो इन से महब्बत करे, उस से भी महब्बत कर ।

(ترمذی، باب مناقب حسن رضی اللہ عنہ، ۵/ ۴۲۷، حدیث ۳۷۹۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को हसनैने करीमैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से कैसी महब्बत थी कि आक़ा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام किसी मौक़अ़ पर दोनों शहज़ादों को कितने महब्बत भरे अन्दाज़ में अपने सीने से लगाए हुवे थे ।

ख़ुत़बा छोड़ दिया

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बुरैदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि एक दफ़अ़ा रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें ख़ुत़बा इरशाद फ़रमा रहे थे, इसी दौरान ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन और सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا तशरीफ़ लाए, उन्हों ने सुर्ख़ रंग की क़मीसें पहनी हुई थीं, कम उ़म्री की वज्ह से गिरते, पड़ते चले आ रहे थे, नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब उन्हें देखा तो मिम्बर से नीचे तशरीफ़ ले आए, दोनों शहज़ादों को उठाया और अपने सामने बिठा लिया फिर फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला का इरशाद सच है : اِنَّمَاۤ اَمْوَالُكُمْ وَ اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ (پ ۲۸، التغابن: ۱۵) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम्हारे माल और तुम्हारे बच्चे जांच (आज़माइश) ही हैं । मैं ने इन बच्चों को देखा कि गिरते, पड़ते आ रहे हैं तो मुझ से सब्र न हो सका, ह़त्ता कि मैं ने अपनी बात काट कर इन्हें उठा लिया । (ترمذی، باب مناقبِ حسن، ۵/ ۴۲۹، حدیث ۳۷۹۹)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : इस मौक़अ़ पर हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (दोनों शहज़ादों को) ह़ाज़िरीन में से किसी से न मंगाया, न किसी और की गोद में बिठाया बल्कि ख़ुद मिम्बर शरीफ़ से उतर कर ख़ुत़बा छोड़ कर बच्चों के पास गए, उन्हें उठा कर लाए अपने बराबर बिठाया । येह है हुज़ूर (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की इन्तिहाई महब्बत उन दोनों से, (नीज़) इस आयते करीमा में ''فِتْنَةٌ'' ब मा'ना आफ़त या मुसीबत नहीं बल्कि ब मा'ना मेह़नत या आज़माइश है, **अल्लाह** तआ़ला इन के ज़रीए मोमिन को सवाब देता है ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 8 / 478)

तरबिय्यते औलाद की अहम्मिय्यत !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई औलाद की तरबिय्यत एक आज़माइश से कम नहीं है, अगर इन्सान सह़ीह़ मा'नों में शरीअ़त के ऐन मुत़ाबिक़ अपनी औलाद की तरबिय्यत कर जाए, तो औलाद उस के लिये

www.dawateislami.net

सवाबे जारिया का सबब है और अगर औलाद सह़ीह़ तरबिय्यत न होने के सबब ख़ुदा न ख़ास्ता गुनाहों की राह पर चल पड़े, तो ऐसी औलाद वालिदैन के लिये जहां दुन्या में रुस्वाई का सबब बन जाती है, वहीं आख़िरत में भी वालिदैन की पकड़ का सबब बन सकती है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا ने एक शख़्स से फ़रमाया : अपने बच्चे की अच्छी तरबिय्यत करो क्यूंकि तुम से तुम्हारी औलाद के बारे में पूछा जाएगा कि तुम ने उस की कैसी तरबिय्यत की है और तुम ने उसे क्या सिखाया। (شعب الایمان، ۲/۴۰۰)

औलाद की सह़ीह़ तरबिय्यत करने का बेहतरीन वक़्त बचपन होता है। जिस त़रह़ मोम को किसी भी सांचे में ढाला जाए तो वोह आसानी से ढल जाता है, इसी त़रह़ बच्चों को उन की इब्तिदाई उ़म्र में जिस भी रंग में रंगा जाए, वोह रंगते चले जाते हैं क्यूंकि बचपन में उन की याद दाश्त एक ख़ाली तख़्ती की मानिन्द होती है, उस पर जो लिखा जाएगा, सारी उ़म्र के लिये मह़फ़ूज़ हो जाएगा। देखा जाता है कि बचपन की आ़दात आख़िर उ़म्र तक साथ रहती हैं, इस लिये अगर बच्चे को बचपन ही से सलाम करने में पहल का आ़दी बनाया जाए तो वोह उ़म्र भर इस आ़दत को नहीं छोड़ेगा, अगर उसे बचपन ही से नमाज़ की पाबन्दी करने, क़ुरआने करीम की तिलावत करने, फ़िल्मों, ड्रामों और गुनाहों भरे मुख़्तलिफ़ चेनल्ज़ से बचने, मां-बाप और बड़ों का अदबो एह़तिराम करने, सच बोलने की आ़दत डाली जाए, तो वोह सारी उ़म्र झूट से बेज़ार रहेगा, इसी त़रह़ अगर उसे सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाने, पीने, बैठने, जूता पहनने, लिबास पहनने, सर पर इमामा बांधने वग़ैरा का आ़दी बचपन में ही बना दिया जाए, तो वोह न सिर्फ़ ख़ुद इन पाकीज़ा आ़दात को अपनाए रखेगा बल्कि उस के येह अच्छे औसाफ़ उस के साथ रहने वाले दीगर बच्चों में भी मुन्तक़िल होना शुरूअ़ हो जाएंगे।

याद रखिये ! अगर हमारी तरबिय्यत बच्चे को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दगी, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गुलामी और इस्लामी मुआ़शरे में उस की ज़िम्मेदारी न सिखा सकी तो उसे अपना फ़रमां बरदार बनने का ख़्वाब

देखना भी छोड़ दीजिये, क्यूंकि येह इस्लाम ही है जो एक मुसलमान को अपने वालिदैन का मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार बनने की ता'लीम देता है। इस लिये औलाद की ज़ाहिरी ज़ेबो ज़ीनत, अच्छी गिज़ा, अच्छे लिबास और दीगर ज़रूरिय्यात की कफ़ालत के साथ साथ उन की अख़्लाक़ी व रूह़ानी तरबिय्यत के लिये भी कमर बस्ता हो जाइये।

जामिअ़तुल मदीना, मद्रसतुल मदीना और दारुल मदीना का मुख़्तसर तआ़रुफ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी जहां बड़ों की इस्लाह़ की कोशिश में मसरूफ़ है, वहीं छोटे बच्चों को भी दीनी ता'लीमो तरबिय्यत के ज़रीए मुआ़शरे का एक अहम फ़र्द बनाने के लिये भी मसरूफ़े अ़मल है। दा'वते इस्लामी के तह़्त क़ाइम होने वाले कई शो'बाजात जैसे मद्रसतुल मदीना, जामिअ़तुल मदीना और दारुल मदीना इस का मुंह बोलता सुबूत हैं। ख़ास त़ौर पर दारुल मदीना एक ऐसा ता'लीमी इदारा है जो दीनी व दुन्यवी ता'लीम का ह़सीन इम्तिज़ाज है, जिस में पढ़ने वाला बच्चा बड़ा हो कर बा वक़ार मुसलमान बन सकता है। "**दारुल मदीना**" के क़ियाम का बुन्यादी मक़्सद उम्मते मुस्त़फ़ा की नई नस्लों को सुन्नतों के सांचे में ढालते हुवे दीनी व दुन्यवी ता'लीम से आरास्ता करना है। अगर हम भी चाहते हैं कि हमारे बच्चे भी नमाज़, रोज़े के पाबन्द बनें, सुन्नतों के आईना दार बनें, मां-बाप के फ़रमां बरदार बनें, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर बनें, इ़ल्मे दीन ह़ासिल कर के नेकी की दा'वत की धूमें मचाने वाले बनें, तो हमें भी चाहिये कि हम अपने बच्चों को ऐसा पाकीज़ा मदनी माह़ोल फ़राहम करें, जहां ऐसी तरबिय्यत करने का इन्तिज़ाम हो।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के जामिआ़तुल मदीना, मदारिसुल मदीना और दारुल मदीना में ख़ुसूसिय्यत के साथ मदनी तरबिय्यत पर भी तवज्जोह दी जाती है। यहां पढ़ने वाले त़लबाए किराम और मदनी मुन्नों को नेकियों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़ता कर्दा

मदनी इन्आमात पर अ़मल की तरग़ीब दिलाई जाती है । लिहाज़ा आप भी अपने बच्चों को जामिअ़तुल मदीना, मद्रसतुल मदीना और दारुल मदीना में दाख़िल करवाइये, आप का बच्चा भी बड़ा हो कर सुन्नतों का पैकर और इ़ल्मे दीन का मुबल्लिग़ बन जाएगा । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "सदाए मदीना"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये और ज़ैली ह़ल्के़ के 12 मदनी कामों में हि़स्सा लेते रहिये । इन 12 मदनी कामों में से रोज़ाना का एक मदनी काम "**सदाए मदीना**" लगाना भी है । दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये उठाने को **सदाए मदीना** लगाना कहते हैं ।

मन्क़ूल है कि अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह मा'मूल था कि आप लोगों को नमाज़ के लिये बेदार करते, जब नमाज़े फ़ज्र के लिये तशरीफ़ लाते, रास्ते में लोगों को नमाज़ के लिये जगाते हुवे आते नीज़ अज़ाने फ़ज्र के फ़ौरन बा'द अगर मस्जिद में कोई सोया होता, तो उसे भी जगाते । (طبقات کبریٰ، ذکر استخلاف عمر، ۳/۲۶۳) और अगर कोई नमाज़े फ़ज्र में ग़ैर हाज़िर होता, तो उस के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करते । चुनान्चे,

एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सुब्ह़ की नमाज़ में ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन अबी ह़स्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नहीं देखा । बाज़ार तशरीफ़ ले गए, रास्ते में उन का घर था, उन की मां ह़ज़रते सय्यिदतुना शिफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया कि सुब्ह़ की नमाज़ में, मैं ने सुलैमान को नहीं पाया ? उन्हों ने कहा : रात में नमाज़ (या'नी नफ़्लें) पढ़ते रहे फिर नींद आ गई, सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : सुब्ह़ की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ूं, येह मेरे नज़दीक इस से बेहतर है कि रात में कि़याम करूं (या'नी रात भर नफ़्लें पढ़ूं) ।

(موطّا امام مالک ج۱ ص۱۳۴ حدیث۳۰۰، अज़ नेकी की दा'वत, स. 479)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाते और नमाज़ में ग़ैर ह़ाज़िर अफ़राद की घर जा कर ख़ैर ख़बर लेते । हमें भी चाहिये कि सदाए मदीना लगाने के साथ साथ नमाज़ों के अवक़ात में येह भी नोट किया करें कि हमारे मह़ल्ले के इस्लामी भाइयों में से कौन जमाअ़त से नमाज़ पढ़ता है और कौन नहीं । अगर कोई नमाज़ी किसी नमाज़ में ग़ैर ह़ाज़िर हो तो उस के घर जा कर या फ़ोन कर के उस की ख़ैर ख़बर भी लें, बीमार हो गया हो तो इ़यादत करें और सुस्ती की वज्ह से न आया हो तो नेकी की दा'वत दें । तमाम इस्लामी भाइयों को येह अन्दाज़ इख़्तियार करना चाहिये, इस से हमारी मस्जिदों की रौनक़ बह़ाल रहेगी । अगर हमारी इनफ़िरादी कोशिश से एक इस्लामी भाई भी नमाज़ का आ़दी बन गया, तो यक़ीनन नेकी की दा'वत देने का सवाब मिलने के साथ साथ येह सदक़ए जारिया का सबब भी बनेगा । اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

कामिल मुसलमान बनने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये । اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुआ़शरे के कई बिगड़े हुवे अफ़राद दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकत से राहे रास्त पर आ चुके हैं । इसी ज़िम्न में एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है । चुनान्चे,

मदनी बहार

मथुरा (हिन्द) के एक इस्लामी भाई का कुछ यूं बयान है : मैं एक मॉडर्न नौ जवान था, फ़िल्में, ड्रामे देखना मेरा मश्ग़ला था, मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाले बयान की केसेट "**T.V. की तबाहकारियां**" सुन्ने का शरफ़ ह़ासिल हुवा जिस ने मेरी काया पलट दी, मैं दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से मुन्सलिक हो गया । मुझे APPENDIX की बीमारी हो गई और डॉक्टर ने ऑप्रेशन का मश्वरा दिया, मैं घबरा गया, ऐसे में दा'वते इस्लामी के एक मुबल्लिग़ की इनफ़िरादी कोशिश के नतीजे में ज़िन्दगी में पहली बार आ़शिक़ाने रसूल के साथ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया । اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले की

www.dawateislami.net

बरकत से बिग़ैर ऑप्रेशन के मेरा मरज़ जाता रहा, अब हर माह 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआदत हासिल करता हूं, हर माह मदनी इन्आमात का रिसाला जम्अ करवाता हूं और मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने की ख़ातिर घूम, फिर कर सदाए मदीना लगाता हूं।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 248)

लगा फ़ज्र में भाई घर घर में जा कर
ज़रा दिल लगा कर "सदाए मदीना"

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 369)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हसनैने करीमैन की दिलजूई के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बच्चों की तबीअत निहायत हुस्सास होती है और उन का दिल शीशे से ज़ियादा नाज़ुक होता है। अगर बच्चों को बात बात पर झिड़का जाए बल्कि उन्हें मारा भी जाए, तो उन की तबीअत में चिड़चिड़ापन, बद तमीज़ी और बद मिज़ाजी जैसी ख़ामियां पैदा हो जाती हैं, यूं उस क़ीमती हीरे की ग़लत तराश, ख़राश उसे बे मोल और बेकार बना देती है जब कि बच्चों की दिलजूई करना और घुल मिल जाना, उन में ख़ुद ए'तिमादी, बरदाश्त और हुस्ने अख़्लाक़ जैसे ख़ूब सूरत औसाफ़ पैदा कर देता है। हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम बच्चों से बहुत प्यार फ़रमाते और शफ़्क़त व महब्बत भरा सुलूक फ़रमाते जब कि हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन व हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا की दिलजूई फ़रमाने में सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अन्दाज़ ही निराले थे। आइये ! उन में से चन्द वाक़िआत सुनते हैं :

सरकार सज्दे को तवील फ़रमा देते

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन शद्दाद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه अपने वालिद हज़रते शद्दाद बिन हाद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत करते हैं कि एक मरतबा सरकारे दो आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मग़रिब या इशा की नमाज़ पढ़ाने के लिये तशरीफ़ लाए, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इमामे हसन या इमामे हुसैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا

www.dawateislami.net

में से किसी एक शहज़ादे को उठाए हुवे थे । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ पढ़ाने के लिये आगे बढ़े और शहज़ादे को अपने पास बिठा दिया फिर नमाज़ के लिये तक्बीर फ़रमाई और नमाज़ शुरूअ़ कर दी । नमाज़ के दौरान आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने त़वील सज्दा फ़रमाया, ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنۡه कहते हैं : मैं ने सर उठा कर देखा कि शहज़ादे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पुश्ते मुबारक पर सुवार हैं और सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सज्दे में हैं, मैं फिर सज्दे में चला गया । जब नमाज़ अदा फ़रमा चुके तो लोगों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप ने नमाज़ में इतना त़वील सज्दा किया कि हम ने गुमान किया कि कोई अम्रे इलाही वाक़ेअ़ हो गया है या आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर वह़ी नाज़िल होने लगी है, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐसी कोई बात नहीं थी, मेरा बेटा मुझ पर सुवार था, मुझे येह बात पसन्द न आई कि मैं जल्दी करूं और इस की दिल शिक्नी हो ।

(نسائی، کتاب التطبیق، باب ھل یجوز أن تکون سجدۃ أطول۔۔۔ الخ، ص۱۹۶، حدیث:۱۱۳۸)

*क्या बात **रज़ा** उस चमनिस्ताने करम की*
ज़हरा है कली जिस में हुसैन और ह़सन फूल

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 79)

صَلُّوۡا عَلَى الۡحَبِيۡب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सब से ज़ियादा मह़बूब

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنۡه फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया गया : अहले बैत में आप को ज़ियादा मह़बूब कौन है ? फ़रमाया : "ह़सन और हुसैन رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنۡهُمَا" । मज़ीद फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنۡهَا से फ़रमाते : "मेरे बच्चों को मेरे पास लाओ फिर उन्हें सूंघते और अपने साथ लिपटा लेते ।"

(ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی محمد الحسن۔۔۔ الخ، ۴۲۸/۵، حدیث:۳۷۹۷)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الۡحَنَّان इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : मह़ब्बत की बहुत क़िस्में हैं, औलाद

www.dawateislami.net

से महब्बत और क़िस्म की है, अज़्वाज से और क़िस्म की, दोस्तों से और क़िस्म की । औलाद में हज़रते हसनैन बहुत प्यारे हैं, अज़्वाज में हज़रते आइशा सिद्दीक़ा महबूबए महबूबे रब्बुल आलमीन हैं, दोस्त व अहबाब में हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ बहुत प्यारे हैं, लिहाज़ा अहादीस में तआरुज़ नहीं । मज़ीद फ़रमाते हैं कि हुज़ूर उन्हें क्यूं न सूंघते वोह दोनों तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फूल थे, फूल सूंघे ही जाते हैं, उन्हें कलेजे से लगाना लिपटाना इन्तिहाई महब्बत व प्यार के लिये था । इस से मा'लूम हुवा कि छोटे बच्चों को सूंघना, उन से प्यार करना, उन्हें लिपटाना, चिमटाना सुन्नते रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है । (मिरआतुल मनाजीह, 8 / 477)

जो अपनी ज़िन्दगी में सुन्नतें उन की सजाते हैं
उन्हें प्यारा मुहम्मद मुस्तफ़ा अपना बनाते हैं

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 289)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हसनैने करीमैन की हौसला अफ़्ज़ाई

हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से रिवायत है कि एक मरतबा हसनैने करीमैन رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने कुश्ती लड़ रहे थे । नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इमामे हसन رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से फ़रमा रहे थे : हसन ! हुसैन को पकड़ लो । हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं, मैं ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप हसन की हौसला अफ़्ज़ाई फ़रमा रहे हैं, हालांकि येह बड़े हैं ? सरकारे दो आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : दूसरी तरफ़ जिब्रईले अमीन हैं जो हुसैन को ऐसे ही कह कर हौसला अफ़्ज़ाई फ़रमा रहे हैं । (سیر اعلام النبلاء، الحسن بن علی، ۳۹۲/۴)

उन दो का सदक़ा जिन को कहा मेरे फूल हैं
*कीजिये **रज़ा** को हश्र में ख़न्दां मिसाले गुल*

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 77)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि बच्चों की दिलजूई करना, उन से शफ़्क़त से पेश आना और हौसला अफ़्ज़ाई करना सरकारे वाला तबार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक अन्दाज़ है नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि अपने बच्चों से प्यार व महब्बत से पेश आना चाहिये और हर मुआमले में उन के साथ शफ़्क़त भरा बरताव करना चाहिये, उन्हें अपने साथ खिलाना चाहिये और उन्हें खुश रखने की हर मुमकिन कोशिश करनी चाहिये ।

हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक जन्नत में एक घर है, जिसे **''अल फ़र्ह''** कहा जाता है, उस में वोही लोग दाख़िल होंगे, जो बच्चों को खुश करते हैं । (جامع صغیر، الحدیث۲۳۲۱،ص۱۴۰)

बच्चों से महब्बत कीजिये

मा'लूम हुवा अपनी औलाद और बच्चों को ख़ुश करना जन्नत में दाख़िले का सबब भी है । बच्चे की नफ़्सियाती ज़रूरिय्यात में से येह भी है कि उस से महब्बत और शफ़्क़त भरा बरताव किया जाए, वोह बच्चे जो मां-बाप की महब्बत से महरूम रहते हैं, बसा अवक़ात नफ़्सियाती बीमारियों में मुब्तला दिखाई देते हैं, अच्छे खानों, कपड़ों और खिलौनों के बजाए बच्चे इस बात के ज़ियादा मोहताज होते हैं कि उन के वालिदैन उन पर तवज्जोह दें और उन से महब्बत करें । बा'ज लोग अपने बच्चों के सामने मालो अस्बाब के तो ढेर जम्अ कर देते हैं लेकिन उन्हें अपनी हक़ीक़ी तवज्जोह और प्यार, महब्बत से महरूम रखते हैं, उन के पास इस क़दर भी वक़्त नहीं होता कि वोह अपनी औलाद से महब्बत भरी चन्द बातें ही कर लें । इसी तरह बा'ज़ वालिदैन ऐसे भी होते हैं, जो अपने बच्चों से बेजा सख़्ती करते हैं, हालांकि जिस तरह एक बच्चे की अच्छी सिहहत के लिये मु-तवाज़िन ग़िज़ा ज़रूरी है, इसी तरह बच्चों की अच्छी तरबिय्यत के लिये वालिदैन का मुनासिब प्यार भी बहुत ज़रूरी है । आइये ! बच्चों से महब्बत के इज़्हार के चन्द तरीक़े सुनते हैं :

1. उन की जाइज़ ख़्वाहिशात को अपनी वुस्अत के मुताबिक़ पूरा करने की कोशिश की जाए ।

2. उन की बातों को तवज्जोह से सुनने की आ़दत बनाई जाए, बसा अवक़ात बच्चे कुछ मा'लूमाती सुवालात करते हैं, इस मौक़अ़ पर भी उन की पूरी बात सुननी चाहिये, इस से उन की ह़ौसला अफ़्ज़ाई भी होगी और मज़ीद सीखने का ज़ेह्‌न बनेगा, जब कि फ़ुज़ूल गुफ़्तगू करने से बचपन ही से उन्हें बचने का ज़ेह्‌न दिया जाए।
3. कोई भी अच्छा काम सर अन्जाम देने (मसलन नमाज़ की पाबन्दी करने, तिलावते क़ुरआन करने, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करने वग़ैरा) पर उन्हें तह़ाइफ़ दिये जाएं या उन की ह़ौसला अफ़्ज़ाई की जाए।
4. बच्चों से ग़लती हो जाने की सूरत में उन्हें प्यार व मह़ब्बत से ही समझाया जाए, ब वक़्ते ज़रूरत सख़्ती से भी काम ले सकते हैं लेकिन याद रहे कि बेजा और ह़द से ज़ियादा ग़ुस्से का इज़्हार बच्चों के दिलों में नफ़रत के बीज बो सकता है।
5. येह भी ज़ेह्‌न नशीन रहे कि बच्चों से बेजा लाड प्यार आप की औलाद से मह़ब्बत नहीं बल्कि उन के लिये ज़ह्‌रे क़ातिल है। (जहां उन को समझाने, उन की तरबिय्यत करने की ह़ाजत हो, वहां अह़सन अन्दाज़ से फ़ौरन समझाने का सिलसिला होना चाहिये)

औलाद की बेहतरीन तरबिय्यत के मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मदनी फूल ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 188 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"तरबिय्यते औलाद"** और रसाइल **"औलाद के ह़ुक़ूक़"** और **"बेटी की परवरिश"** हदिय्यतन ह़ासिल फ़रमा कर इन का मुत़ालआ़ कीजिये।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज के बयान में हम ने ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से सरकार عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मह़ब्बत के ह़वाले से सुना कि :

❖ आक़ा عَلَیْہِ السَّلَام को इन दोनों शहज़ादों (ह़ज़राते ह़सन व ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से बेह़द प्यार था और येह उसी प्यार और तरबिय्यत का एक इज़्हार था कि दोनों शहज़ादों के नाम भी सरकार عَلَیْہِ السَّلَام ने रखे थे।

www.dawateislami.net

❖ ह़ज़राते ह़सन व ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا का अ़क़ीक़ा सरकार عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ख़ुद फ़रमाया था, दोनों की तरबिय्यत आक़ा عَلَيۡهِ السَّلَام ने ख़ुद फ़रमाई।

❖ ह़ज़राते ह़सन व ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا को घुट्टी आक़ा عَلَيۡهِ السَّلَام ने दी, ह़ज़राते ह़सन व ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا का बचपन आक़ा عَلَيۡهِ السَّلَام के सामने गुज़रा।

❖ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़सनैने करीमैन, सय्यिदैन, जलीलैन, शहीदैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا को अपने मुबारक कन्धों पर सुवार फ़रमाते, अल ग़रज़ ! हर हर काम में आक़ा عَلَيۡهِ السَّلَام उन की दिलजूई फ़रमाते और उन से अपनी दाइमी मह़ब्बत का इज़्हार फ़रमाते।

❖ **अल्लाह** तआ़ला हमें भी ह़ज़राते ह़सनैने करीमैन, जमीअ़ अहले बैते अत़हार समेत जुम्ला सह़ाबए किराम رِضۡوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَيۡهِمۡ اَجۡمَعِيۡن से न सिर्फ़ ख़ुद मह़ब्बत करने बल्कि अपनी औलाद को भी उन की मह़ब्बत और सीरत पर चलते हुवे ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مِشْکاۃُ الْمَصابِیح، ج۱ص۵۵حدیث ۱۷۵ دار الکتب العلمیۃ بیروت)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِيۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बात चीत करने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये ! दा'वते इस्लामी के मत़बूआ़ रिसाले "**101 मदनी फूल**" से बात चीत के ह़वाले से चन्द अहम मदनी फूल सुनते हैं : ❖ मुस्कुरा कर और ख़न्दा पेशानी से बात चीत कीजिये

❖ मुसलमानों की दिलजूई की निय्यत से छोटों के साथ मुश्फ़िक़ाना और बड़ों के साथ मुअद्दबाना लहजा रखिये ❖ चिल्ला चिल्ला कर बात करने से ह़द दरजा एह़तियात़ कीजिये ❖ चाहे एक दिन का बच्चा हो अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ उस से भी आप जनाब से गुफ़्तगू की आ़दत बनाइये, आप के अख़्लाक़ भी اِنۡ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उ़म्दा होंगे और बच्चा भी आदाब सीखेगा ❖ बात चीत करते वक़्त पर्दे की जगह हाथ लगाना, उंगलियों के ज़रीए़ बदन का मैल छुड़ाना, दूसरों के सामने बार बार नाक को छूना या नाक या कान में उंगली डालना, थूकते रहना अच्छी बात नहीं ❖ जब तक दूसरा बात कर रहा हो इत़मीनान से सुनिये, बात काटने से बचिये नीज़ दौराने गुफ़्तगू क़ह्क़हा लगाने से बचिये कि क़ह्क़हा लगाना सुन्नत से साबित नहीं । बात करते वक़्त हमेशा याद रखिये कि ज़ियादा बातें करने से हैबत जाती रहती है ❖ किसी से जब बात चीत की जाए तो उस का कोई सह़ीह़ मक़्सद भी होना चाहिये और हमेशा मुख़ात़ब के ज़र्फ़ और उस की नफ़्सियात के मुत़ाबिक़ बात की जाए ❖ बद ज़बानी और बे ह़याई की बातों से हर वक़्त परहेज़ कीजिये, गाली गलोच से इजतिनाब करते रहिये और याद रखिये कि किसी मुसलमान को बिला इजाज़ते शरई गाली देना ह़रामे क़त़ई है । (फ़तावा रज़विय्या, जि. 21, स. 127) और बे ह़याई की बात करने वाले पर जन्नत ह़राम है । हु़ज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उस शख़्स पर जन्नत ह़राम है जो फ़ोह़्श गोई (बे ह़याई की बात) से काम लेता है । (کتابُ الصَّمْت مع موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، ج۷ص ۲۰۴ رقم ۳۲۵)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब **बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16** (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

आ़शिक़ाने रसूल आएं सुन्नत के फूल
देने लेने चलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक और 2 दुआएं

﴾1﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الْحَبِیْبِ الْعَالِی الْقَدْرِ الْعَظِیْمِ الْجَاہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़् कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।** (اَفۡضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات ص ۱۵۱ ملخصًا)

﴾2﴿ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।** (اَیضاً ص ٦٥)

﴾3﴿ रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۲۷۷)

﴾4﴿ दुरूदे शफ़ाअ़त :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْہُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ

शाफ़ेए उमम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ! ! !**

(الترغیب والترہیب ج۲ص۳۲۹،حدیث ۳۱)

《5》 **छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللّٰہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْکِ اللّٰہِ

हज़रते अह़मद सावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** ह़ासिल होता है । (اَفْضَلُ الصَّلَوٰات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات)

《6》 **कुर्बे मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दरमियान बिठा लिया । इस से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है !!!** जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है । (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۱۲۵)

एक हज़ार दिन की नेकियां

جَزَی اللّٰہُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا ھُوَ اَھْلُہٗ

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं ।** (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

गोया शबे क़द्र ह़ासिल कर ली

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने इस दुआ़ को 3 मरतबा पढ़ा तो गोया उस ने शबे क़द्र ह़ासिल कर ली । (تاریخ ابنِ عساکر، ۱۹/۱۵۵، حدیث: ۴۴۱۵)

दुआ़ येह है :

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ ، سُبْحٰنَ اللّٰہِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْم

(या'नी ख़ुदाए ह़लीम व करीम के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवर दगार है) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. 1163-1164)

www.dawateislami.net